

## पन्ना टाइगर रज़िर्व में हुई गदिधों की जीपीएस टैगिंग

### चर्चा में क्यों?

8 मार्च, 2022 को पन्ना टाइगर रज़िर्व के क्षेत्र संचालक उत्तम कुमार शर्मा ने बताया कि प्रदेश में पन्ना टाइगर रज़िर्व में गदिधों के व्यवहार और रहवास के मामले में प्रामाणिक जानकारी जुटाने में देश में पहली बार अनूठी पहल हुई है। यहाँ गदिधों को पकड़कर जीपीएस टैगिंग की जा रही है।

### प्रमुख बिंदु

- पन्ना टाइगर रज़िर्व में गदिधों पर जीपीएस टैगिंग का कार्य पन्ना टाइगर रज़िर्व और भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून के शोधकर्त्ता की टीम द्वारा 2020-21 एवं 2021-22 में सर्दियों के दौरान किया गया।
- पन्ना टाइगर रज़िर्व में उपलब्ध 25 गदिधों को सौर ऊर्जा चलित जीपीएस उपकरणों से टैग किया गया है। इसमें 3D त्वरण सेंसर शामिल हैं। जीपीएस टैग डेटा उपग्रह के माध्यम से ट्रैक किया जा रहा है।
- गदिध टेलीमेट्री परियोजना की यह बड़ी उपलब्धि है। गदिध टैगिंग भारत के ओल्ड वर्ल्ड गदिधों के विलुप्त होने से रोकने और संरक्षण की सुनियोजित पहल है।
- इस अनूठी पहल से अब तक 14 गदिध प्रजातियों को 24 देशों में टैग कर अध्ययन किया गया है। इसमें कोई भी भारत से नहीं है। भारत में गदिधों की 9 प्रजातियाँ हैं। गदिध प्रजातियों के संरक्षण में प्रदेश को अच्छे परिणाम मिले हैं। वर्ष 2021 में गदिधों की संख्या बढ़कर 9446 हो गई है।
- भारत में उपलब्ध गदिधों की 9 प्रजातियों में से 3 प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं। इनमें से 7 प्रजातियाँ पन्ना टाइगर रज़िर्व में उपलब्ध हैं। इनमें घूमालयन ग्रफ़िऑन, यूरेशियन ग्रफ़िऑन और सनिरस जैसी प्रवासी प्रजातियाँ और भारतीय लंबी चोंच वाला गदिध, सफ़ेद पीठ वाला राज गदिध और इजिप्शियन गदिध जैसी प्रवासी प्रजातियाँ शामिल हैं।
- उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ दशकों में गदिधों की संख्या में भारी कमी आई है। गदिधों के संरक्षण के प्रयास देश भर में तकरीबन 10-12 वर्ष पहले से शुरू हुए और टेलीमेट्री आधारित परियोजना इस दशा में सार्थक कदम है।
- जीपीएस टैगिंग के माध्यम से गदिधों के आने-जाने, प्रवास के मार्ग की जानकारी और रहवास आदिकी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इससे गदिधों का वैज्ञानिक प्रबंधन सुनिश्चित हो सकेगा।
- इस व्यवस्था में जीपीएस टैगिंग के साथ गदिधों के स्वास्थ्य परीक्षण में खून के नमूने लिये गए हैं। इससे गदिधों के स्वास्थ्य का स्टेटस पता चल सकेगा। गदिधों की यह जानकारी भविष्य में गदिधों के प्रबंधन की नीतियाँ बनाने में अहम साबित होंगी।